जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है !

शुध्द चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किये जातें है!

(पांडुशिला, सिंघासन ,छत्र ,चंवर प्रातिहार्य , जापमाला , मंगल कलश,पूजा बर्तन चंदोवा,तोरण,झारी)

नोट :- हमारे यहाँ घरो मे उपयोग हेतु , साधुओं के उपयोग हेतु, अनुष्ठानो मे उपयोग हेतु शुध्द देशी घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है !

Contact:-
Sourabh Sagar Indore
9993602663
7722983010
sourabhjn1989@gmail.com

जैन

जय जिनेन्द्र

गाय का शुद्ध देशी घी

शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानो को ध्यान में रख कर बनाया गया शुद्ध देशी घी

घी ऐसा के दिल जीत जाये !

अब 1kg की पैकिंग में भी उपलब्ध

संपर्क सूत्र

Contact For Order

Sourabh Sagar Indore

Call & Whatsapp:

9993602663,7722983010

All India Home Delivery

विशद
लघु ऋषिमण्डल विधान

(आचार्य गुणनन्दिकृत ऋषिमण्डल विधान के आधार पर)

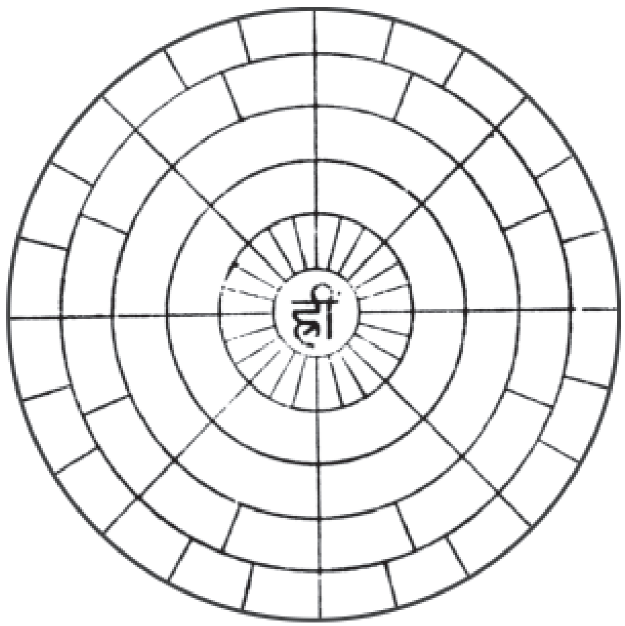

ॐ ह्राँ ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यक्दर्शनज्ञान-
चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

रचयिता

प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद ऋषिमण्डल विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2012 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग -
ब्र. सुखनन्दनजी भैया

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - किरण, आरती दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र मो. 9812502062
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09416882301

4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

मूल्य - 51/- रु. मात्र (आगामी प्रकाशन हेतु)

-: अर्थ सौजन्य : -

श्रीमान् महेश चन्द जैन (विकास पेपर)

सी-24 फेस-1, विवेक विहार, दिल्ली फोन-22932235

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

अपनी बात

श्री विद्याभूषण सूरि एवं श्री गुणनन्दी मुनिकृत श्री ऋषिमण्डल विधान के बारे में कई बार सुना था जिसकी पूजा करने से अनेक प्रकार की बाधाएँ दूर हो जाती हैं तथा रोगी भी निरोगता को प्राप्त होता है तथा जैसाकि विधान का नाम है ऋषिमण्डल अर्थात् 'साधु समूह' और साधु का वर्णन करते हुए आचार्य श्री उमास्वामी ने तत्त्वार्थ सूत्र 9/46 में कहा है–**'पुलाक वकुश कुशील निर्ग्रन्थ स्नातका निर्ग्रन्था'** अर्थात् मुनि के पाँच भेद हैं जिनमें स्नातक यानि केवलज्ञानी तीर्थंकर भी समाहित है तो सबसे पहले ऋषि मण्डल विधान में ह्रीं के अन्दर 24 तीर्थंकर की आराधना की गई है। साथ ही सम्पूर्ण वर्ण सिद्ध हैं जिनका ध्यान योगीश्वरों द्वारा किया जाता है जिनसे सम्पूर्ण आगम का उद्भव हुआ है। उन वर्णों की आराधना सिद्ध रूप में की गई है।

मण्डल समूह में पञ्च परमेष्ठी एवं रत्नत्रय समूह की आराधना की गई है। साथ ही श्रुत एवं देशावधि, परमावधि, सर्वावधि ज्ञानधारी की अर्चा की गई है। साथ ही ऋद्धि के मुख्य आठ भेद, 64 उत्तर भेद रूप से ऋद्धियों की पूजा की गई है। जिस पूजा के मुख्य अधिकारी देव–देवियाँ हैं।

जाहिर है जब कोई विधान होता है तो सर्वप्रथम इन्द्र प्रतिष्ठा की जाती है। उस समय स्वर्ग के देवों की स्थापना मनुष्यों में की जाती है एवं जब प्रभु को केवलज्ञान होता है तब समवशरण में चतुर्निकाय के देव उपस्थित होकर प्रभु की अर्चा करने में तत्पर रहते हैं। यहाँ भी चतुर्निकाय के देवों का एवं 24 देवियों का आह्वान किया है कि हे देव और देवियों ! हमारे इस पूजा विधान मण्डल में आकर आप प्रभु की अर्चा करो और अन्त में उन्हें सम्मान भेंट देकर संतुष्ट किया साथ ही निवेदन किया कि हमारे अनुष्ठान में आने वाली बाधाओं को दूर करो एवं याचक तथा पूजक को सुख–समृद्धि प्रदान कर उनका जीवन मंगलमय करो।

विधान की रचना इतनी सुन्दर और सुचारू रूप से की गई है कि जिसमें सभी आराध्यों की आराधना की गई है तथा सभी आराधकों को आह्वान करके आराधना में शामिल किया गया है जो सामञ्जस्य का श्रेष्ठ उदाहरण है जिसका अनुवाद करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

ऋषि मण्डल में ऋद्धिधारी मुनियों का स्मरण किया गया है जो अनेक सिद्धियाँ प्रदान करने वाली हैं। यह विधान करके भक्तजन प्रभु भक्ति कर आत्मकल्याण करें एवं शान्ति प्राप्त करें।

– आचार्य विशदसागर

(रेवाड़ी–31–7–2011)

श्रद्धा के भाव

इत्यत्र त्रितयात्मनि, मार्गे मोक्षस्य ये स्वहित कामाः।
अनुपरतं प्रयतन्ते, प्रयान्ति ते मुक्ति मचिरेण।।

अर्थ–आचार्य अमृतचन्द स्वामी लिखते हैं इस लोक में जो अपने हित के इच्छुक मोक्ष मार्ग के रत्नत्रयात्मक मार्ग में सर्वदा अटके बिना चलने का प्रयास करते हैं वे पुरुष ही मुक्ति को प्राप्त करते हैं।

आत्मदृष्टा एवं आध्यात्म योगी सन्त पुरुष हमारी भारतीयता का एक आधार हैं। आध्यात्मिकता से आप्लावित भारतीय संस्कृति के प्राण हैं। तीर्थंकरों का निमित्त मिल जाने पर चेतना जागृत हो जाती है, सम्पूर्ण सुख मिल जाता है। तीर्थंकरों की परम्परा में चलने वाले संत भी लोकोत्तर हैं। ऐसे संत समाज में दुर्लभ हैं। इस पंचमकाल में ऋद्धिधारी मुनि न होते, न होंगे। लेकिन चतुर्थ काल के मुनियों को ऐसी चौंसठ ऋद्धियाँ प्राप्त हुईं अगर पत्तों पर चलते तो जीवों का घात नहीं होता, कितनी भी बीमारी हो जाए उनके शरीर का मल कफ आदि के लग जाने पर रोगों से मुक्त हो जाते हैं। ऐसे संत समाज में दुर्लभ हैं। संतों की श्रेणी में धर्म प्रभावना करने वाले श्रद्धा लोक के देवता, मधुर वक्ता, प्रज्ञाश्रमण, क्षमामूर्ति चँवलेश्वर के छोटे बाबा 108 आचार्य विशदसागर गुरुदेव ने परमात्मा के प्रति भक्ति समर्पण कर **'ऋषिमण्डल विधान'** की रचना में अपनी कलम से एक–एक शब्द को भावों से सजाकर विधान का रूप दिया है। हे गुरुवर ! आपकी प्रज्ञा का, आपकी मुस्कान चर्या और क्रिया का गुणानुवाद उतना ही कठिन है जितना भरे हुए समुद्र में रत्न को ढूँढ़ना मुश्किल है।

हे गुरुवर ! आप श्रावकों को धर्म मार्ग पर चलाने के लिए कितने पुरुषार्थ कर रहे हैं और श्रावक देखो भौतिकवादी युग में अन्धा होकर दौड़ रहा है। अनेक तनाव परेशानी से ग्रसित होकर रोगों का शिकार हो रहा है। वह सोचता है कि धन से सुखी है तो सब सुख है। ये तो हम सबकी भूल है। हे गुरुवर ! आपकी महिमा हम अल्पबुद्धि श्रावकों पर सदा बरसती रहे, हम सभी आपके पदचिह्नों पर चलें।

ये हवा आपकी हँसी की खबर देती है।
मेरे मन को खुशी से भर देती है।।
प्रभु खुश रखे आपकी खुशी को।
क्योंकि आपकी हंसी हमें मुस्कान देती है।।

– ब्र. सपना दीदी

(संघस्थ आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज)

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् ! ।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा ।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य–**ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।**

जयमाला

दोहा– **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा– नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्–शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ऋषि मण्डल विधान

मंगलाचरण

दोहा– ज्ञानादि वसु ऋद्धियाँ, संत और भगवंत।
इनकी अर्चा से सभी, विघ्नों का हो अंत।।

जीव कर्म के योग से, पाते दुःख महान्।
जैन धर्म की भक्ति से, रहे न नाम निशान।।
परम अहिंसा मय धरम, मंगल कहा त्रिकाल।
धारण करके जीव यह, सुखी होय तत्काल।।
ऋषि मण्डल पूजन विशद, सुख शान्ति का मूल।
पुरजन परिजन मित्रगण, हो जाते अनुकूल।।
सूरि श्री गुणनन्दी जी, संस्कृत भाषाकार।
लिखकर के यह ग्रन्थ शुभ, किया बड़ा उपकार।।
हिन्दी भाषा में लिखा, विशद सिन्धु आचार्य।
रचना जो भी की गई, इसको ले आधार।।
कर्म असाता का उदय, अन्तराय संयोग।
सम्यक् दृष्टि जीव को, भी दुःखों का योग।।
अर्चा करने से सभी, विघ्नादि हों दूर।
कर्म असाता नाश हो, अन्तराय हो चूर।।
विधि पूर्वक भाव से, करके पूजन पाठ।
शान्ति समृद्धि बढ़े, होवें ऊँचे ठाठ।।
याजक तृष्णा रहित मन, ज्ञाता हो विद्वान।
शुद्धोच्चारण वचन शुभ, याजक करे बखान।।

दोहा– सम्यक् दर्शन ज्ञान युत, निर्मल चारित वान।
विधि विधान ज्ञाता शुभम्, हो आचार्य महान।।

श्रद्धालु विनयी महा, न्याय उपार्जित द्रव्य।
शीलादि गुणवान शुभ, हो यजमान सुसभ्य।।
इत्यादि गुण से सहित, विनयवान यजमान।
जैनागम में कहा है, पूजक श्रेष्ठ महान।।

विधानाचार्य लक्षण

सज्जाति सम्यक्त्वी ज्योतिष, देशव्रती ज्ञानी विद्वान।
यंत्र तंत्र विद् विधि विधान का, ज्ञाता निर्लोभी गुणवान।।
पाप भीरु आगम का वक्ता, गुरु उपासक जग हितकार।
श्रेष्ठ विधानाचार्य शान्तिप्रिय, विशद प्रभावक मंगलकार।।

विधानकर्त्ता

सम्यक्त्वी श्रद्धालु अणुव्रती, दुर्व्यसनी जाति निर्दोष।
संकल्पी हिंसा का त्यागी, मूलगुणी जो करे न रोष।।
पूजक दानी भक्त गुरु का, स्वाध्यायी जिन दर्शन वान।
हीनाधिक न अंग कोई हो, अंधा गूंगा बहरा वान।।
रोगी या गर्हित व्यापारी, कुष्ट जलोदर ज्वर से युक्त।
मूर्ख और कंजूस घमण्डी, लोभी न माया संयुक्त।।
न्यायोपार्जित कार्य करे, न मूर्ख और ना ही कंजूस।
ऐसा हो यजमान श्रेष्ठ शुभ, किसी से न लेता हो घूस।।
जब विधान की इच्छा हो तो, मुनि सान्निध्य में जावे।
श्रीफल ले परिवार सहित वह, आशीर्वाद शुभ पावे।।
राज्य राष्ट्र के अन्य विधर्मियों, को अनुकूल बनावें।
आमन्त्रण दे सब भव्यों को, शान्ति यज्ञ करावें।।

मण्डल स्थान

चौपाई– स्वच्छ भूमि होवे चौकोर, खम्भ लगाएँ चारों ओर।
श्रेष्ठ चंदोवा बाँधा जाए, मण्डप श्रेष्ठ सजाया जाए।।
चउ कोनों पर कलशा चार, मंगल कलश भी भली प्रकार।
गाजे बाजे मंगलगान, खुश होकर करवाएँ आन।।
तीन छत्र ऊपर लटकाएँ, चँवर सामने श्रेष्ठ सजाएँ।
माँडे मण्डल यथा विधान, मंत्र विधि का राखें ध्यान।।

दोहा– नेत्रों को सुखकर लगे, मंगलमय शुभकार।
उत्तम हो उत्कृष्ट शुभ, मूल्यवान मनहार।।
अष्ट द्रव्य अनुपम सभी, रक्खे विधि के साथ।
तन मन की शुद्धि करें, धोके अपने हाथ।।

लघु ऋषि मण्डल रचना

लिखकर दोहरा ह्रीं शुभ, उसमें लिखे जिनेश।
प्रथम वलय रचना करें, सारा हरे क्लेश।।
ह्रीं के चंद्राकार में, चन्द्र पुष्प जिन नाथ।
मुनिसुव्रत अरु नेमि जिन, लिखे बिन्दु में साथ।।
ई मात्रा के बीच में, पार्श्व सुपार्श्व महान।
पदम प्रभु वासुपूज्य का, रेखा में स्थान।।
शेष सभी तीर्थेश को ह्र में, लिखें प्रधान।
जैसा जिनका रंग है, करें उसी में ध्यान।।
द्वितीय वलय बनाइये, जिसमें कोठे आठ।
स्वर व्यञ्जन जिसमें लिखे, वर्ण मातृका पाठ।।
वलय तीसरा कर पुनः, कोठे पाँच व तीन।
पाँच पञ्च परमेष्ठि के, रत्नत्रय के तीन।।

चौथा वलय बनाइये, सोलह कोठेदार।
चउ निकाय के देव में, श्रुतावधि के चार।।
अष्ट-अष्ट ऋद्धि सहित, क्रमशः लिखकर नाम।
भक्ति भाव से पूजिए, श्रेष्ठ बनेंगे काम।।
पञ्चम वलय बनाइये, कोठे हों चौबीस।
उसमें माँडे देवियाँ, पावें जिन आशीष।।
ॐ ह्रीं क्ष्वीं क्षः नमः, के बीजाक्षर चार।
चार दिशा में यह लिखें, यंत्र होय तैयार।।

ऋषि मण्डल स्तोत्र

आदि ''अ'' अक्षर ह अन्त, ख से लेकर व पर्यन्त।
रेफ में अग्नि ज्वाला नाद, बिन्दु युत अर्हं उत्पाद।।1।।
अग्नि ज्वाला सम आक्रान्त, मन का मल करता उपशांत।
हृदय कमल पर दैदीप्यमान, वह पद निर्मल नमूँ महान।।2।।
नमो अर्हद्भ्यः ईशेभ्यः, ॐ नमो नमः सिद्धेभ्यः।
ॐ नमो सर्व सूरिभ्यः, ॐ नमः उपाध्यायेभ्यः।।3।।
ॐ नमो सर्व साधुभ्यः, ॐ नमः तत्त्व दृष्टिभ्यः।
ॐ नमः शुद्ध बोधेभ्यः, ॐ नमः चारित्रेभ्यः।।4।।
अर्हन्तादि पद ये आठ, स्थापन करके दिश आठ।
निज निज बीजाक्षर के साथ, लक्ष्मीप्रद हैं सुखकर नाथ।।5।।
पहला पद सिर रक्षक जान, द्वितीय मस्तक का पहिचान।
तीजा पद नेत्रों का मान, करें चतुष्पद नाशा त्राण।।6।।
पञ्चम मुख का रक्षक होय, ग्रीवा का छठवाँ पद सोय।
सप्तम पद नाभि का जान, अष्टम द्वय पद का पहिचान।।7।।
प्रणवाक्षर ॐ पुनः हकार, रेफ बिन्दुयुत हो शुभकार।
द्वय तिय पञ्चम षष्ठी जान, सप्त अष्ट दश द्वादश मान।।8।।

ह्रीं नमः विधि के अनुसार, मंत्र बने शुभ अतिशयकार।
ऋषि मण्डल स्तवन शुभकार, श्रेयस्कर है मंत्र अपार।।9।।

जाप- ॐ ह्राँ ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यक्दर्शनज्ञान चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

(शम्भू छंद)

सिद्ध मंत्र में बीजाक्षर नव, अष्टादश शुद्धाक्षर वान।
भक्ति युत आराधक को शुभ, फलदायी है मंत्र महान।।10।।
जम्बूद्वीप लवणोदधि वेष्टित, जम्बू वृक्ष जिसकी पहचान।
अर्हदादि अधिपति वसु दिश में, वसु पद शोभित महिमावान।।11।।
जम्बूद्वीप के मध्य सुमेरु, लक्ष कूट युत शोभावान।
ज्योतिष्कों के ऊपर ऊपर, घूम रहे हैं श्रेष्ठ विमान।।12।।
ह्रीं मंत्र स्थापित जिस पर, अर्हंतों के बिम्ब महान।
निज ललाट में स्थित कर मैं, नमूँ निरंजन सतत् प्रधान।।13।।

(चौपाई)

जिन अज्ञान रहित घन गाए, अक्षय निर्मल शांत कहाए।
बहुल निरीह सारतर स्वामी, निरहंकार सार शिवगामी।।14।।
अनुद्धूत शुभ सात्विक जानो, तैजस बुद्ध सर्वरीसम मानो।
विरस बुद्ध स्फीत कहाए, राजस मत तामस कहलाए।।15।।
परपरापर पर कहलाए, सरस विरस साकार बताए।
निराकार परापर जानो, परातीत पर भी पहिचानो।।16।।
सकल निकल निर्भृत कहलाए, भ्रांति वीत संशय बिन गाए।
निराकांक्ष निर्लेप बताए, पुष्टि निरंजन प्रभु कहाए।।17।।
ब्रह्माणमीश्वर बुद्ध निराले, सिद्ध अभंगुर ज्योति वाले।
लोकालोक प्रकाशक जानो, महादेव जिनको पहिचानो।।18।।

बिन्दु मण्डित रेफ कहाया, चौथे स्वर युत शांत बताया।
ह्रीं बीज वर्ण सुखदायी, ध्यान योग्य अर्हत् के भाई।।19।।
एक वर्ण द्विवर्ण गिनाए, त्रिवर्णक चतु वर्णक गाए।
पञ्चवर्ण महावर्ण निराले, परापरं पर शब्दों वाले।।20।।
उन बीजों में स्थित जानो, वृषभादि जिन उत्तम मानो।
निज-निज वर्णयुक्त बिन गाए, सब ध्यातव्य यहाँ बतलाए।।21।।
नाद चंद्र सम श्वेत बताया, बिन्दु नील वर्ण सम गाया।
कला अरुण सम शांत कहाई, स्वर्णाभा चउदिश में गाई।।22।।
हरित वर्ण युत ई शुभ जानो, ह र स्वर्ण वर्ण मय जानो।
वर्णानुसार प्रभु को ध्याएँ, चौबिस जिन पद शीश झुकाएँ।।23।।
चन्द्र पुष्प जिन श्वेत बताए, नाद के आश्रय से शुभ गाए।
नेमि मुनिसुव्रत जिन जानो, बिन्दु मध्य में प्रभु को मानो।।24।।
कला सुपद शुभ है शिवगामी, वासुपूज्य पद्म प्रभ स्वामी।
ई स्थित सोहे मनहारी, श्री सुपार्श्व पार्श्व अविकारी।।25।।
शेष सभी तीर्थंकर जानो, ह र के आश्रय से मानो।
माया बीजाक्षर में गाए, चौबिस तीर्थंकर बतलाए।।26।।
राग-द्वेष गत मोह कहाए, सर्व पाप से वर्जित गाए।
सर्वलोक में जिन शुभकारी, सदा सर्वदा मंगलकारी।।27।।

(चौपाई)

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, सर्पों से न बाधा होय।।28।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, नागिन से न बाधा होय।।29।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, गोहों से न बाधा होय।।30।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, वृश्चिक से न बाधा होय।।31।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, काकिनि से न बाधा होय।।32।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, डाकिनि से न बाधा होय।।33।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, साकिनि से न बाधा होय।।34।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, राकिनि से न बाधा होय।।35।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, लाकिनि से न बाधा होय।।36।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, शाकिनि से न बाधा होय।।37।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, हाकिनि से न बाधा होय।।38।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, भैरव से न बाधा होय।।39।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, राक्षस से न बाधा होय।।40।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, व्यंतर से न बाधा होय।।41।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, भेकस से न बाधा होय।।42।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, लीनस से न बाधा होय।।43।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, मम ग्रह से न बाधा होय।।44।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, चोरों से न बाधा होय।।45।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, अग्नि से न बाधा होय।।46।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, श्रृंगिण से न बाधा होय।।47।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, दंष्ट्रिण से न बाधा होय।।48।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, रेलप से न बाधा होय।।49।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, पक्षी से न बाधा होय।।50।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, मुद्गल से न बाधा होय।।51।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, जृंम्भक से न बाधा होय।।52।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, मेघों से न बाधा होय।।53।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, सिंहों से न बाधा होय।।54।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, शूकर से न बाधा होय।।55।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, चीतों से न बाधा होय।।56।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, हाथी से न बाधा होय।।57।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, राजा से न बाधा होय।।58।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, शत्रु से न बाधा होय।।59।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, ग्रामिण से न बाधा होय।।60।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, दुर्जन से न बाधा होय।।61।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, व्याधि से न बाधा होय।।62।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, सब जन से न बाधा होय।।63।।

(चौपाई)

श्री गौतम की मुद्रा प्यारी, जग में श्रुत उपलब्धि कारी।
उससे प्रखर ज्योति को पाए, अर्हत् सर्व निधीश्वर गाए।।64।।
देव सभी पाताल निवासी, स्वर्ग लोक पृथ्वी के वासी।
देव स्वर्ग वासी शुभकारी, रक्षा मिल सब करें हमारी।।65।।
अवधि ज्ञान ऋद्धि के धारी, परमावधि ज्ञानी अविकारी।
दिव्य मुनि सब ऋद्धिधारी, रक्षा वह सब करें हमारी।।66।।
भावन व्यन्तर ज्योतिष वासी, वैमानिक के रहे प्रवासी।
श्रुतावधि देशावधि धारी, योगी के पद ढ़ोक हमारी।।67।।

परमावधि सर्वावधि धारी, संत दिगम्बर हैं अविकारी।
बुद्धि ऋद्धि सर्वौषधि पाए, ऋद्धि धारी संत कहाए।।68।।
बल अनन्त ऋद्धि धर पाए, तप्त सुतप उन्नति बढ़ाए।
क्षेत्र ऋद्धि रस ऋद्धि धारी, ऋद्धि विक्रिया धर अविकारी।।69।।
तप सामर्थ्य मुनि अविकारी, क्षीण सद्म महानस धारी।
यतिनाथ जो भी कहलाते, उनके पद में हम सिरनाते।।70।।
तारक जन्मार्णव शुभकारी, दर्शन ज्ञान चारित्र के धारी।
भव्य भदन्त रहे जग नामी, इच्छित फल पावें हे स्वामी।।71।।

(शम्भू छंद)

ॐ श्री ह्री कीर्ति लक्ष्मी, गौरी चण्डी सरस्वती।
क्लिन्नाजिता मदद्रवा धृति, नित्या विजया जयावती।।72।।
कामांगा कामबाणा नन्दा, नन्दमालिनी अरु माया।
कलि प्रिया रौद्री मायाविनी, काली कला करें छाया।।73।।
रक्षाकारी महादेवियाँ, जिन शासन की सर्व महान।
कांति लक्ष्मी धृति मति दें, क्षेम करें सब जगत प्रधान।।74।।
दुर्जन भूत पिशाच क्रूर अति, मुद्गल हैं वेताल प्रधान।
वह प्रभाव से देव-देव के, सब उपशान्त करें गुणगान।।75।।
श्री ऋषि मण्डल स्तोत्र यह, दिव्य गोप्य दुष्प्राप्त महान।
जिन भाषित है तीर्थनाथ कृत, रक्षा कारक महिमावान।।76।।
रण अग्नि जल दुर्ग सिंह गज, का संकट हो नृप दरबार।
घोर विपिन श्मशान में भाई, रक्षक मंत्र रहा मनहार।।77।।
राज्य भ्रष्ट को राज्य प्राप्त हो, सुपद भ्रष्ट पद पाते लोग।
संशय नहीं हैं इसमें पावें, लक्ष्मी हीन लक्ष्मी का योग।।78।।
भार्यार्थी भार्या पाते हैं, पुत्रार्थी पाते सुत श्रेष्ठ।
धन के इच्छुक धन पाते हैं, नर जो स्मरण करें यथेष्ट।।79।।

स्वर्ण रजत कांसे पर लिखकर, उसे पूजते जो भी लोग।
शाश्वत महा सिद्धियों का वह, अतिशय पाते हैं संयोग।।80।।
शीश कण्ठ बाहू में पहनें, भूर्जपत्र पर लिखिये मंत्र।
भय विनाश होते हैं उनके, जो धारें अतिशय शुभ यंत्र।।81।।
भूत-प्रेत ग्रह यक्ष दैत्य सब, या पिशाच आदि कृत कष्ट।
वात पित्त कफ आदि रोग भी, हो जाते हैं सारे नष्ट।।82।।
भूर्भुवः स्वः त्रय पीठ स्थित, शाश्वत हैं जिनबिम्ब महान।
उनके दर्शन वन्दन स्तुति, श्रेष्ठ सुफल हैं जगत प्रधान।।83।।
महा स्तोत्र यह गोपनीय शुभ, जिस किसको न देना आप।
मिथ्यात्वी को देने से हो, पद-पद पर शिशु वध का पाप।।84।।
चौबिस जिन की पूजा द्वारा, आचाम्लादि तप के योग।
अष्ट सहस्र जापकर विधिवत्, कार्य सिद्ध करते हैं लोग।।85।।
प्रतिदिन प्रातः अष्टोत्तर शत्, इसी मंत्र का करते जाप।
सुख-सम्पत्ति पाते इच्छित, रोगों का मिटता संताप।।86।।
प्रातः आठ माह तक नित प्रति, इस स्तोत्र का करके पाठ।
तेज पुञ्ज अर्हन्त बिम्ब के, दर्शन से हों ऊँचे ठाठ।।87।।
सप्त भवों में भाव समाधि, जिन दर्शन से होते मुक्त।
परमानन्द प्राप्त करते हैं, होते शाश्वत सुख से युक्त।।88।।

दोहा- यह स्तोत्र महास्तोत्र है, सब संस्तुतियों युक्त।
पाठ जाप स्मरण कर, दोषों से हो मुक्त।।
कर स्तोत्र महास्तोत्र का, पाठ स्मरण जाप।
दोषों से मुक्ति मिले, 'विशद' मिटे संताप।।

।। इति ऋषि मण्डल स्तोत्र समाप्त।।

जिनका दर्शन करते करते, निज का दर्शन पाना है।
सिद्ध सनातन है पद मेरा, विशद सिद्धपुर जाना है।।

ऋषिमण्डल स्तवन

दोहा- कर्मों का फैला विशद, कट जाए मम जाल।
हम ऋषि मण्डल को, यहाँ करते नमन त्रिकाल।।

(शम्भू छंद)

ऋषि मण्डल शुभ यंत्र लोक में, मंगलमय मंगलकारी।
जिसमें राजित श्रेष्ठ महाशुभ, ह्रीं अक्षर महिमाकारी।।
यंत्रराज का है नायक जो, चौबिस जिनवर युक्त कहा।
अ आ इ ई आदि स्वर में, सिद्ध वर्ण संयुक्त रहा।।1।।
क आदि हैं वर्ण पंच शुभ, उनका भी इसमें स्थान।
ह भ आदि बीजाक्षर शुभ, आठों का है कथन महान।।
पाँचों परमेष्ठी शोभित हैं, रत्नत्रय भी रहा प्रधान।
सर्व ऋषीश्वर शोभित होते, तप बल धारी ऋद्धिवान।।2।।
श्रुतावधि धर चारों मुनिवर, जिनके गुण हैं अपरम्पार।
चऊ निकाय के देव शरण में, भक्ति करते बारम्बार।।
श्री ही आदि सभी देवियाँ, सेवा करें चरण में आन।
अन्तिम वलय में घेरे हैं ज्यों, नगरी में कोटा जान।।3।।
विधि सहित जो पूजा करते, पाते वह सुख-शांति महान।
महिमा इसकी जग से न्यारी, कठिन रहा जिसका गुणगान।।
सर्व दुःखों को हरने वाली, पूजा कही है अपरम्पार।
मंत्र जाप शुभ करने वाला, शीघ्र होय इस भव से पार।।4।।
मुक्तिश्री को जपने वाले, करते हैं शिव पद में वास।
अक्षयश्री को पा जाते हैं, होते तारण तरण जहाज।।
ऋषि मण्डल जग श्रेष्ठ कहा है, तीनों लोक में रहा प्रसिद्ध।
विघ्न हरण मंगल कारक है, होय भावना मन की सिद्ध।।5।।

दोहा- ऋषि मण्डल शुभ यंत्र की, पूजा अपरम्पार।
सुख-शांति पावे 'विशद', करके बारम्बार।।

ऋषि मण्डल समुच्चय पूजा

स्थापना

चौबिस जिन वसु वर्ग शुभ, पञ्च गुरु त्रय रत्न।
चैत्यालय चऊ देव के, चार अवधि कर यत्न।।
अष्ट ऋद्धि चऊ बीस सुरि, पूजित जिन अरिहंत।
ह्रीं तीन दिग्पाल दस, युक्त यंत्र गुणवन्त।।
ऋषि मण्डल में देवियाँ, और देव परिवार।
आकर के रक्षा करें, पूजूँ विधि अनुसार।।

ॐ ह्रीं वृषभादि चौबिस तीर्थंकर, अष्ट वर्ग, अर्हंतादि पञ्चपद, दर्शन-ज्ञान-चारित्र सहित चतुर्निकाय देव, चार प्रकार अवधिधारक श्रमण, अष्ट ऋद्धि संयुक्त चतुर्विंशति सूरि, त्रय ह्रीं, अर्हद् बिम्ब, दशदिग्पाल, यन्त्रसम्बन्धि परमदेव अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

शुभ चेतन सम उज्ज्वल निर्मल, यह नीर चरण में लाए हैं।
है बन्ध अनादि आयु का, वह बन्ध नशाने आए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य सदन का क्रोधानल, हम आज नशाने आए हैं।
शुभ मलयागिरि का चन्दन यह, अब यहाँ चढ़ाने आए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मद से क्षत विक्षत हुए अब तक, पद अक्षय पाने आए हैं।
यह धवल अमल अक्षय अक्षत, हम पूजा करने लाए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य सुरभि के उपवन से, यह सुरभित पुष्प मंगाए हैं।
निष्काम स्वरूप जगाने को, हम काम नशाने आए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अति क्षुधा वेदना से अविरत, हम पीड़ित होते आए हैं।
चेतन में तन्मयता पाने, व्यञ्जन अर्चा को लाए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वीतराग के विज्ञानी, जो विशद ज्ञान प्रगटाए हैं।
उसका प्रकाश पाने हम भी, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धूप सुरभि निर्झरणी से, चेतन को शुद्ध बनाना है।
कर्मों का दल बल उछल रहा, अब उसको मार भगाना है।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सुर तरु के रसदार शुभं, यह अर्चित करने लाए हैं।
अब मोक्ष महल में हो प्रवेश, अतएव शरण में आए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्मय चिद्रूप सुगुण अपने, अब हम प्रगटाने आए हैं।
अब मोक्ष महल में हो प्रवेश, अतएव शरण में आए हैं।।
ऋषभादि जिन गणधर वाणी, ऋद्धिधारी मुनि अविकारी।
हम ऋषिमण्डल को पूज रहे, मम जीवन हो मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **देते जल की धार शुभ, लेकर प्रासुक नीर।**
अर्चा करते भाव से, पाने को भव तीर।।

शांतये शांतिधारा

दोहा– **पुष्पाञ्जलि करने यहाँ, लाए पुष्पित फूल।**
अर्चा के फल से सभी, होंय कर्म निर्मूल।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– तीन लोक में रत्नत्रय, धारी ऋद्धि त्रिकाल।
उनकी पूजा कर यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(छन्द : तोटक)

जय आदिनाथ भगवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।
अजितनाथ पद माथ नमस्ते, जोड़ जोड़ द्वय हाथ नमस्ते।।
सम्भव भव हर देव नमस्ते, अभिनन्दन जिनदेव नमस्ते।
सुमतिनाथ के पाद नमस्ते, पदम प्रभु पद माथ नमस्ते।।
श्री सुपार्श्व जिनराज नमस्ते, चन्द्र प्रभु पद आज नमस्ते।
पुष्पदन्त गुणवन्त नमस्ते, शीतल जिन शिवकंत नमस्ते।।
जय श्रेयनाथ भगवंत नमस्ते, वासुपूज्य धीवन्त नमस्ते।
विमलनाथ जिनदेव नमस्ते, प्रभु अनन्त सब देव नमस्ते।।
धर्मनाथ जिनदेव नमस्ते, शान्तिनाथ अनूप नमस्ते।
जय-जय कुन्थुनाथ नमस्ते, जय अरहनाथ पद साथ नमस्ते।।
जय मल्लिनाथ भगवान नमस्ते, मुनिसुव्रत व्रतवान नमस्ते।
जय नमिनाथ पद माथ नमस्ते, जय नेमिनाथ जिन साथ नमस्ते।।
जय पार्श्वनाथ धर धीर नमस्ते, तीर्थंकर महावीर नमस्ते।
अष्ट वर्ग शुभकार नमस्ते, परमेष्ठी मनहार नमस्ते।।
जय दर्शन ज्ञान चारित्र नमस्ते, जय जैनागम सुपवित्र नमस्ते।
चउ देवों के जिन गेह नमस्ते, शाश्वत क्षेत्र विदेह नमस्ते।।
जय चार अवधि मुनिराज नमस्ते, जय ऋद्धिधर ऋषिराज नमस्ते।
चौबिस देवि से पूज्य नमस्ते, जो तीन काल हैं पूज्य नमस्ते।।
जय ध्वजा आदि शुभकार नमस्ते, चैत्यालय मनहार नमस्ते।
जय वीतराग विज्ञान नमस्ते, श्री विराग की खान नमस्ते।।

करते देवी देव नमस्ते, पूजा करें सदैव नमस्ते।
जल चन्दन शुभ लाय नमस्ते, अक्षत पुष्प मँगाए नमस्ते।।
चरु शुभ दीप जलाय नमस्ते, श्री जिन चरण चढ़ाय नमस्ते।
ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र नमस्ते, श्री जिन चरण चढ़ाय नमस्ते।।
ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र नमस्ते, संकटहारी तंत्र नमस्ते।
विद्यार्थी विज्ञान नमस्ते, निर्गुण हो गुणवान नमस्ते।।
उपकारी जगनाथ नमस्ते, भक्ति भाव के साथ नमस्ते।
श्रद्धा के आधार नमस्ते, व्रतदायक अनगार नमस्ते।।
मुक्ति पथ दातार नमस्ते, भव से करते पार नमस्ते।
हमको देना साथ नमस्ते, 'विशद' झुकाते माथ नमस्ते।।

(अडिल छंद)

ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र परम हितकार है।
भव-भव के दुखों का मैटनहार है।।
जीवों को सुख-शान्ति प्रदायक मानिए।
शिवपद दाता श्रेष्ठ 'विशद' पहिचानिए।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय ऋषिमण्डल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, ऋषि मण्डल शुभ यंत्र की।
बने श्री का नाथ, जो नित प्रति पूजा करें।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रथम वलयः

दोहा– वर्ण ह्रीं को पूज कर, पाऊँ सौख्य महान।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, आके यहाँ प्रधान।।

(मण्डलस्योपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ह्रीं पूजा

स्थापना

श्रेष्ठ परम आराध्य ऋद्धियों, का बीजाक्षर ह्रीं कहा।
ऋषभादि चौबिस तीर्थंकर, पिण्डवर्ण संयुक्त रहा।।
वर्ण मातृका सहित दहन विधि, अष्ट ऋद्धि संयुक्त महान।
पञ्च परम गुरु की पूजा सब, चतुर निकाय के देव प्रधान।।
देवि जयादि भक्ति करके, करती हैं जिसका गुणगान।
ऐसे अनुपम अर्थ का ज्ञायक, ह्रीं का हम करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायप्रभृतिपरिकरोद्योतक ह्रीं बीजाक्षर ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

जग में हम भटके सदियों से, न भाव शुद्ध हो पाए हैं।
अब निर्मलता पाकर मन में, जन्मादि नशाने आए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छाएँ पूर्ण न हो पाईं, मन में संताप बढ़ाए हैं।
अब इच्छाओं की शांति कर, संताप नशाने आए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मन खण्डित मण्डित हुआ सदा, आखिर अखण्ड पद न पाए।
अब इच्छाओं की शांति हेतु, यह पुञ्ज चढ़ाने आए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम बाण से बिद्ध रहे, न भोगों से बच पाए हैं।
अब काम रोग के नाश हेतु, यह पुष्प सुगन्धित लाए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा ने हमें सताया है, न जीत उसे हम पाए हैं।
अब नाश हेतु हम क्षुधा रोग, नैवेद्य चढ़ाने आए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह तिमिर से अंध हुए, निज का स्वरूप न लख पाए।
निज ज्ञानदीप की ज्योति लगे, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के धूम से इस जग के, सारे ही जीव अकुलाए हैं।
अब कर्म नाश करने हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का फल पाकर प्राणी, सारे जग में भटकाए हैं।
अब रत्नत्रय का फल पाएँ, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह द्रव्य भाव में कारण है, उससे हम अर्घ्य बनाए हैं।
अब पद अनर्घ पाने हेतु, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।

बीजाक्षर ह्रीं की पूजा से, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
मन में श्रद्धा धारण करके, जो पूजा नित्य रचाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस तीर्थंकरों के अर्घ्य

श्री आदीश जिनेन्द्र प्रभु, आदि ब्रह्म अवतार।
चरण वंदना कर मिले, आदि धर्म आधार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीते विषय कषाय अरु, मद को जीता साथ।
अजितनाथ बनने झुका, अजितनाथ पद माथ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्भव जिन सम्भाव से, पाए आत्म स्वभाव।
निज स्वभाव पा जाऊँ मैं, बने हृदय में भाव।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन वन्दन करूँ, हमको करो निहाल।
अभिनन्दन मैं बन सकूँ, शीश झुकाता बाल।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ ने सुमति से, पाई सुमति महान।
सुमति प्राप्त हो सुमति से, दीजे यह वरदान।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभु की पद्म सम, शुभ्र सुकोमल देह।
बनू पद्म सम मैं प्रभु, त्यागू गेह सनेह।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्व मणि फीकी रहे, जिन सुपार्श्व के पास।
हृदय बसे जिनदेव जी, मम हो चरणों वास।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र चरण में चिह्न है, वर्ण सुचन्द्र समान।
चन्द्रप्रभु के ध्यान से, हो आतम कल्याण।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभम् सुकोमल पुष्प सम, पुष्पदंत भगवान।
वर दे करदो पुष्प सम, बन जाऊँ गुणवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतस्तल में तैरकर, शीतल हुए सुदेव।
मम उर भी शीतल बने, पाऊँ चरण की सेव।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।10।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन श्रेयांस ने श्रेय से, किया कर्म का नाश।
निःश्रेयस मैं बन सकूँ, रहे चरण में वास।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।11।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में हुए हो, वासुपूज्य तुम पूज्य।
चरण शरण का दास यह, क्यों हो रहा अपूज्य।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल मल सारा शांत कर, विमलनाथ जिनराज।
माथ झुकाता भाव से, पद में सकल समाज।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त की खान हैं, श्री अनन्त जिनराज।
हम अनन्त गुण पा सकें, होय सफल यह काज।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म धुरन्धर धर्मधर, धर्मनाथ भगवान।
धर्म विशद मैं पा सकूँ, दो हमको यह दान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।15।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रान्ति भ्रान्ति को मैटकर, हुए शांति के नाथ।
शान्तिनाथ के चरण में, झुका रहे हम माथ।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।16।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्री काम कुमार अरु, हुए तीर्थ के नाथ।
कुंथुनाथ जी शरण दो, कभी न छूटे साथ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।17।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विरह किया वसु कर्म से, हुए धर्म के ईश।
अरहनाथ के चरण में, झुका रहे हम शीश।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।18।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह मल्ल को जीतकर, मल्लिनाथ के साथ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ सकूँ, जोड़ रहा मैं हाथ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।19।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत जिनवर हुए, मुनिव्रतों को धार।
पूर्ण व्रतों को प्राप्त कर, भवदधि पाऊँ पार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।20।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नील कमल पर शोभते, नमीनाथ भगवान।
सुगुण बनूँ तुम सा प्रभु, गुण अनन्त की खान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।21।।

ॐ ह्रीं श्री नमीनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राज्य तजा राजुल तजी, धार लिया वैराग्य।
नेमिनाथ तुम सा बनूँ, जगे शुभम सौभाग्य।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।22।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिच्चिन्तामणि पार्श्व जिन, विघ्न विनाशक नाथ।
विघ्न हरण हर लो विघन, झुका चरण में माथ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।23।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

वर्धमान सन्मति प्रभु, वीर और अतिवीर।
महावीर करके कृपा, आन बँधाओ धीर।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य हम, चढ़ा रहे शुभकार।
नाथ आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।24।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– ह्रीं बीजाक्षर में रहे, पञ्च परमपद जान।
करके जयमाला विशद, बने स्वयं गुणवान।।

(कुसुमलता छंद)

वर्ण ह कार चार का वाची, है र कार द्वितीय स्थान।
चौबीस अंकों के ज्ञायक यह, चौबिस जिन के रहे महान।।
शून्य सिद्ध का दर्शायक है, खं वत आत्म विशुद्धिवान।
गण का ईश बताए ई शुभ, साधक साधु उपाध्याय जान।।
ह्रीं रहा परमेष्ठी वाचक, इसकी अर्चा करो महान।
वर्ण बनाया ऋषिमण्डल शुभ, स्वर वर्णादि का स्थान।।

परमेष्ठी रत्नत्रय पाए, धारे आप दिगम्बर भेष।
गणधर श्रुतावधि के धारी, मुक्ति का देते संदेश।।
इन सबको उत्कृष्ट मानकर, जिनकी पूजा करते देव।
पूजा करें भाव से मानव, दुःख हों उनके क्षार सदैव।।
गुण का चिन्तन करने से हो, मानव के परिणाम विशुद्ध।
विशद ज्ञान को पाने वाले, हो जाते हैं प्राणी बुद्ध।।
पुण्य प्रकृतियाँ उदय में आके, रस देती अनुपम सुखकार।
शांति प्राप्त होती तन–मन में, मानव की इच्छा अनुसार।।
पाप कर्म भी परिवर्तित हो, पुण्य रूप होते शुभकार।
होते कर्म संक्रमित क्षण में, साता रूप श्रेष्ठ मनहार।।
संसारी जीवों को जग में, शान्ति साधन रहा प्रधान।
बीजाक्षर शुभ ह्रीं के जैसा, और नहीं कोई स्थान।।
भाव सहित हम भी करते हैं, श्रेष्ठ ह्रीं का शुभ गुणगान।
''विशद'' भावना मन में मेरे, बना रहे मेरा श्रद्धान।।
सुख–दुःख की घड़ियों में हरदम, करता रहूँ ह्रीं का ध्यान।
अन्तिम यही भावना मेरी, हो जाए आतम कल्याण।।

दोहा– शान्ति का हेतु परम, बीजाक्षर शुभ ह्रीं।
सुख, शान्ति आनन्द का, जानो कोष असीम।।

ॐ ह्रीं श्रीमदर्हदादिज्ञापक ह्रीं बीजाक्षराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– उभय लोक में शान्ति का, है अनुपम स्थान।
विशद हृदय के भाव से, करना है गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

द्वितीय वलयः

दोहा– शब्द ब्रह्म इस लोक में, मंगलमयी महान।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण।।

(मण्डलस्योपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

शब्द ब्रह्म पूजा

स्थापना

आत्म ब्रह्म जाने बिना, परम ब्रह्म न पाते हैं।
लौकिक आगम मात्र जल्पना, बिना शब्द नश जाते हैं।।
अनेकान्त अरु स्याद्वाद शुभ, निश्चिय नय हो या व्यवहार।
शब्द ब्रह्म से ही चलता है, पूज्य पूज्यता का व्यापार।।

दोहा- शब्द ब्रह्म हम पर करो, अपनी कृपा महान।
आ तिष्ठो मम हृदय में, करें विशद आह्वान।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्द ब्रह्म ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छंद-जोगीरासा)

प्रासुक करके नीर कूप का, यहाँ चढ़ाने लाए।
ज्ञानावरणी कर्म नाश कर, ज्ञान जगाने आए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चन्दन श्रेष्ठ सुगन्धित, अर्पित करने लाए।
कर्म दर्शनावरण नाशकर, दर्शन पाने आए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत धवल सुगन्धित, अर्पित करने लाए।
कर्म नाशकर वेदनीय हम, अव्याबाध गुण पाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प सुगन्धित अनुपम, भाँति-भाँति के लाए।
गुण सम्यक्त्व प्रकट करके हम, मोह नशाने आए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा को नैवेद्य सरस शुभ, ताजे श्रेष्ठ बनाए।
अवगाहन गुण पाने हेतु, कर्मायु नश जाए।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीप जलाकर जगमग, आरति करने लाए।
गुण सूक्ष्मत्व प्रकट हो मेरा, नाम कर्म नश जाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में यह धूप दशांगी, यहाँ जलाने लाए।
अगुरुलघु गुण प्राप्त हमें हो, गोत्र कर्म नश जाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अनुपम ले सरस सुगन्धित, पूजा करने आए।
गुण वीर्यत्व प्राप्त हो हमको, अन्तराय नश जाए।।

शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ पाने हम अतिशय, अर्घ्य बनाकर लाए।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, सिद्ध सुपद मिल जाए।।
शब्द ब्रह्म की पूजा करके, आत्म ब्रह्म प्रगटाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकद्विप्रमाण शब्दब्रह्मणे अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्द ब्रह्म पूजा के अर्घ्य

अकारादि स्वर अर्द्ध मात्रिक, व्यञ्जन रहित कहाते हैं।
सबसे पहले पूर्व दिशा में, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेद सहित अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ स्वरेभ्यः अं अः अयोगवाहेभ्यश्च पूर्वदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वर्ग क वर्ग कहा है, क ख ग घ ङ है नाम।
आग्नेय में पूजा करके, सब सिद्धों को करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं आग्नेय दिशि क ख ग घ ङ इति कवर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ रहा च वर्ग यहाँ पर, च छ ज झ ञ है नाम।
दक्षिण दिशि में स्थापित कर, अर्घ्य चढ़ा के करें प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं दक्षिण दिशि च छ ज झ ञ इति चवर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज रहे ट वर्ग यहाँ पर, दिशा रही नैऋत्य महान।
ट ठ ड ढ ण अक्षर का, करते यहाँ विशद गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं नैऋत्य दिशि ट ठ ड ढ ण इति टवर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त थ द ध न अक्षर का, श्रेष्ठ कहा त वर्ग प्रधान।
पश्चिम दिश में पूज रहे हैं, जिससे बढ़ता सम्यक् ज्ञान।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिम दिशि त थ द ध न इति तवर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औष्ठ से उच्चारण हो जिसका, वह प वर्ग कहा शुभकार।
प फ ब भ म की पूजा, वायव्य में करते शुभकार।।6।।

ॐ ह्रीं वायव्य दिशि प फ ब भ म इति पवर्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

य र ल व चार वर्ग यह, कहलाते अन्तस्थ महान।
उत्तर दिशा में पूजा करके, करते यहाँ विशद गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तर दिशि य र ल व इति अन्तस्थाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊष्म घोष जिनको कहते हैं, श ष स ह वर्ण प्रधान।
पूजा करते भक्ति भाव से, जिनकी दिशा रही ईशान।।8।।

ॐ ह्रीं ईशान दिशि श ष स ह इति ऊष्म वर्णेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षर क्रमशः आदि में ह भ, य र घ झ स ख जान।
अन्त में ह्म्ल्व्र्यूं को रखकर, आठ मंत्र की हो पहिचान।।
क्रमशः इक इक शोभित होते, आठों कोठों में शुभकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, पूजा करके मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रीं हकारादि अष्टाक्षर संयुक्त ह्म्ल्व्र्यूं आदि अष्ट बीजाक्षरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– शब्द ब्रह्म को पूजकर, करना निज उद्धार।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भवोदधि पार।।

(चाल छन्द)

स्वर अकारादि जो गाए, अ इ उ ऋ कहलाए।
लृ ए ऐ ओ औ जानो, ह्रस्व दीर्घ प्लुत पहिचानो।।
सब सत्ताइस हो जाते, जो स्वर संज्ञा को पाते।
हैं पंच वर्ग क आदि, अन्तस्थ य र ल वादि।।
श ष स ह ऊष्मक गाये, चउ अयोगवाह कहलाए।
सब चौंसठ अक्षर मानो, जो जैनागम से जानो।।
इनके द्वि आदि संयोगी, कई भेद कहे जिन योगी।
एकट्ठी श्रुत हो जाते, सब द्वादशांग में आते।।
आतम परमातम दोई, के ज्ञान में कारण होई।

श्रुत बोध जनावन हारे, ज्ञानी जन भी उच्चारे।।
आश्रय जो इनका पावें, वह सारे कार्य बनावें।
मन की सब कहते भाई, जाने पर की प्रभुताई।।
इनको जो मन से ध्यावें, मूरख भी ज्ञान बढ़ावें।
बिन स्वर व्यञ्जन के कोई, व्यवहार चले न सोई।।
इनका उपपाद न होई, क्षरना इनका न कोई।
अक्षर इसलिए कहाए, जो काल अनादि गाए।।
ज्यों सिद्ध अनादि गाए, त्यों वर्ण सिद्ध कहलाए।
सिद्धों सम पूजे जाते, नवकार मंत्र में आते।।
शिव कारण पैंतीस जानो, सोलह छह पंच बखानो।
गणधर आदि सब गाते, जिनवाणी में भी आते।।
सब में तुमरी प्रभुताई, शिव मार्ग चलाते भाई।
गुण 'विशद' आपके गाते, पद सादर शीश झुकाते।।

दोहा- शब्द ब्रह्म को पूजकर, पाओ शिव का द्वार।
शब्दों से पूजा रची, जग में मंगलकार।।
आलम्बन नाना कहे, मुक्ति हेतु महान।
हो पदस्थ शुभ ध्यान से, मुक्ति पद की खान।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि अक्षर संयोगज एकट्ठिप्रमाण शब्दब्रह्मणे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शब्द ब्रह्म को पूजकर, पाना है शिव धाम।
विशद भाव से हम यहाँ, करते विशद प्रणाम।।

इत्याशीर्वादः

तृतीय वलयः

दोहा- पञ्च परम पद पूजकर, रत्नत्रय उरधार।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, प्राणी हों भव पार।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री पंच परमेष्ठी समुच्चय पूजन

स्थापना

अर्हन्तों के वंदन से, उर में निर्मलता आती है ।
श्री सिद्ध प्रभु के चरणों में, सारी जगती झुक जाती है ।।
आचार्य श्री जग जीवों को, शुभ पञ्चाचार प्रदान करें ।
उपाध्याय करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान का दान करें ।।
हैं साधु रत्नत्रय धारी, उनके चरणों शत्-शत् वंदन ।
हे पञ्च महाप्रभु! विशद हृदय में, करता हूँ मैं आह्वानन् ।।
हे करुणानिधि! करुणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ ।
मैं हूँ अधीर तुम धीर प्रभो! मुझको भी धीर बँधा जाओ ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

(शम्भू छंद)

निर्मल सरिता का प्रासुक जल, मैं शुद्ध भाव से लाया हूँ ।
हो जन्म जरादि नाश प्रभु, तव चरण शरण में आया हूँ ।।
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक, अरु सर्व साधु को ध्याता हूँ ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलता पाने को पावन, चंदन घिसकर के लाया हूँ ।
भव सन्ताप नशाने हेतु, चरण शरण में आया हूँ ।।
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक, अरु सर्व साधु को ध्याता हूँ ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वच्छ अखंडित उज्ज्वल तंदुल, श्री चरणों में लाया हूँ ।
अनुपम अक्षय पद पाने को, चरण शरण में आया हूँ ।।
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक, अरु सर्व साधु को ध्याता हूँ ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निज भावों के पुष्प मनोहर, परम सुगंधित लाया हूँ ।
काम शत्रु के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आया हूँ ।।
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

परम शुद्ध नैवेद्य मनोहर, आज बनाकर लाया हूँ ।
क्षुधा रोग का मूल नशाने, चरण शरण में आया हूँ ।।
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु सर्व साधु को ध्याता हूँ ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर दीप प्रज्ज्वलित करने, मणिमय दीपक लाया हूँ ।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, चरण शरण में आया हूँ ।।
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्मों की प्राप्ति हेतु मैं, धूप दशांगी लाया हूँ ।
अष्ट कर्म का नाश होय मम्, चरण शरण में आया हूँ ।।
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस पक्व निर्मल फल उत्तम, तव चरणों में लाया हूँ ।
परम मोक्ष फल शिव सुख पाने, चरण शरण में आया हूँ ।।
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य मनोहर लाया हूँ ।
निज अनर्घ पद पाने हेतु, चरण शरण में आया हूँ ।।
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँ ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च परमेष्ठी के अर्घ्य

कर्म घातिया नाश किए जिन, दोष अठारह रहित महान।
करुणाकर हे जगत हितैषी, मंगलमय अर्हत् भगवान।।
विशद भावना भाते हैं हम, रहे आपका निशदिन ध्यान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, भाव सहित करते गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशन समर्थेभ्यो अर्हत् जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नोकर्म नाशकर, उत्तम पद पाए निर्वाण।
अविनाशी अक्षय अखण्ड पद, पाए श्री सिद्ध भगवान।।
विशद भावना भाते हैं हम, रहे आपका निशदिन ध्यान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, भाव सहित करते गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं निष्ठित परिपूर्ण भव्यार्थेभ्यः सिद्धेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार समीति गुप्ति, आवश्यक तप तपे महान।
जैनाचार्य धर्म के धारी, त्रिभुवन गुरु कहे गुणवान।।
विशद भावना भाते हैं हम, रहे आपका निशदिन ध्यान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, भाव सहित करते गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं भेदाभेदरत्नत्रयपालन समर्थेभ्यः सूरिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, ज्ञाता जग में रहे प्रधान।
ज्ञान ध्यान में रत रहकर भी, देते सबको सम्यक् ज्ञान।।
विशद भावना भाते हैं हम, रहे आपका निशदिन ध्यान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, भाव सहित करते गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं सिद्धानुष्ठानाभ्यासोद्यते पाठकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, रत्नत्रय धारी गुणवान।
परम दिगम्बर निर्भय साधु, जैनधर्म की अनुपम शान।।
विशद भावना भाते हैं हम, रहे आपका निशदिन ध्यान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, भाव सहित करते गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं परमसुखप्राप्तिबद्धपरमोपेक्षानियतेभ्यः सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु मंगलकारी।
तीन लोक में पूज्य बताए, अतिशय महिमा के धारी।।
विशद भावना भाते हैं हम, रहे आपका निशदिन ध्यान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, भाव सहित करते गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं मोक्षसुखोपलंभबीजभूतेभ्योदर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुतत्त्वदृष्टि ज्ञानचारित्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जिन परमेष्ठी पाँच की, महिमा अपरम्पार ।
गाते हैं जयमालिका, करके जय–जयकार ।।

(छन्द ताटंक)

जय जिनवर केवलज्ञान धार, सर्वज्ञ प्रभु को करूँ नमन ।
जय दोष अठारह रहित देव, अर्हन्तों के पद में वंदन ।।
जय नित्य निरंजन अविकारी, अविचल अविनाशी निराधार ।
जय शुद्ध बुद्ध चैतन्यरूप, श्री सिद्ध प्रभु को नमस्कार ।।
जय छत्तिस गुण को हृदयधार, जय मोक्षमार्ग में करें गमन ।
जय शिक्षा दीक्षा के दाता, आचार्य गुरु को करूँ नमन ।।
जय पच्चिस गुणधारी गुरुवर, जय रत्नत्रय को हृदय धार ।

जय द्वादशांग पाठी महान्, श्री उपाध्याय को नमस्कार ।।
जय मुनि संघ आरम्भहीन, जय तीर्थंकर के लघुनंदन ।
जय ज्ञान ध्यान वैराग्यवान, श्री सर्वसाधु को करूँ नमन् ।।
जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो !, श्री जिनवाणी जग में मंगल ।
जय गुरु पूर्ण निर्ग्रन्थ रूप, जो हरते हैं सारा कलमल ।।
इनका वंदन मैं करूँ नित्य, हो जाए सफल मेरा जीवन ।
मैं भाव सुमन लेकर आया, चरणों में करने को अर्चन ।।
प्रभु भटक रहा हूँ सदियों से, मिल सकी न मुझको चरण शरण ।
अतएव अनादि से भगवन्, पाए मैंने कई जनम–मरण ।।
अब जागा मम् सौभाग्य प्रभु, तुमको मैंने पहिचान लिया ।
सच्चे स्वरूप का दर्शन कर, जो समीचीन श्रद्धान किया ।।
है अर्ज हमारी चरणों में प्रभु, हमको यह वरदान मिले ।
मैं रहूँ चरण का दास बना, जब तक मेरी यह श्वाँस चले ।।
तुम पूज्य पुजारी चरणों में, यह द्रव्य संजोकर लाया है ।
हो भाव समाधि मरण अहा !, यह विनती करने आया है ।।
क्योंकि दर्शन करके हमने, सच्चे पद को पहिचान लिया ।
हम पायेंगे उस पदवी को, अपने मन में यह ठान लिया ।।
अनुक्रम से सिद्ध दशा पाना, अन्तिम यह लक्ष्य हमारा है ।
उस पद को पाने का केवल, जिनभक्ति एक सहारा है ।।
जिनभक्ति कर जिन बनने की, मेरे मन में शुभ लगन रहे।
जब तक मुक्ति न मिल पाए, शुभ 'विशद' धर्म की धार बहे ।।

दोहा– अर्हत् सिद्धाचार्य जिन, उपाध्याय अरु संत ।
इनकी पूजा भक्ति से, होय कर्म का अन्त ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा– परमेष्ठी का दर्श कर, हृदय जगे श्रद्धान ।
पूजा अर्चा से बने, जीवन सुखद महान् ।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

रत्नत्रय पूजा

(स्थापना)

चतुर्गति का कष्ट निवारक, दुःख अग्नि को शुभ जलधार।
शिवसुख का अनुपम है मारग, रत्नत्रय गुण का भण्डार।।
तीन लोक में शांति प्रदायक, भवि जीवों को एक शरण।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण शुभ, रत्नत्रय का है आह्वान।।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चारित्र ! अत्र आगच्छ–आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चारित्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल–नन्दीश्वर)

ले हेम कलश मनहार, प्रासुक नीर भरा।
देते हम जल की धार, नशे मम जन्म–जरा।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की गंध अपार, शीतल है प्यारा।
है भवतम हर मनहार, अनुपम है प्यारा।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यह धवल अनूप, हम धोकर लाए।
अक्षत पाएँ स्वरूप, अर्चा को आए।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद लघु ऋषिमण्डल विधान

ले भाँति–भाँति के फूल, उत्तम गंध भरे।
हो कामबाण निर्मूल, निर्मल चित्त करे।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बना रसदार, मीठे मनहारी।
जो क्षुधा रोग परिहार, के हों उपकारी।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रकाश, तम को दूर करे।
हो मोह महातम नाश, मिथ्या मति हरे।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजी ले धूप सुवास, दश दिश महकाए।
हों आठों कर्म विनाश, भावना यह भाए।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल ले रसदार, अनुपम थाल भरे।
हो मुक्ति फल दातार, भव से मुक्त करे।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, बनाकर यह लाए।
पाने हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य लेकर आए।।

रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यावली (शम्भू छंद)

अष्ट अंग युत सम्यक् दर्शन, पच्चिस दोष रहित शुभकार।
मोक्षमार्ग का मूल कहा जो, तीन लोक में अपरम्पार।।
अन्तर में श्रद्धान जगाकर, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, शिवपुर धाम बनाना है।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग पूर्व की व्याख्या जिसमें, अष्ट अंग युत सम्यक् ज्ञान।
अंग बाह्य अरु अंग प्रविष्टि, सहित बताया जगत महान।।
सम्यक् ज्ञान प्राप्त करके अब, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, शिवपुर धाम बनाना है।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत पंच समीति, तीन गुप्ति से सहित महान।
तेरह विधि चारित्र कहा है, जिससे हो जग का कल्याण।।
सम्यक् चारित्र पाकर, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, शिवपुर धाम बनाना है।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्रमय, मोक्ष मार्ग बतलाया है।
अब तक जिनने मुक्ति पाई, सबने यह अपनाया है।।
रत्नत्रय को धारण करके, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, शिवपुर धाम बनाना है।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– थाल भरा वसु द्रव्य का, दीपक लिया प्रजाल।
रत्नत्रय शुभ धर्म की, गाते हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

मोक्ष मार्ग का अनुपम साधन, रत्नत्रय शुभ धर्म कहा।
जिसने पाया धर्म विशद यह, उसने पाया मोक्ष अहा।।
प्रथम रत्न सम्यक् दर्शन, करना तत्त्वों में श्रद्धान।
निरतिचार श्रद्धा का धारी, सारे जग में रहा महान्।।
श्रद्धाहीन ज्ञान चारित का, रहता नहीं है कोई अर्थ।
कठिन-कठिन तप करना भाई, हो जाता है सभी व्यर्थ।।
गुण का ग्रहण और दोषों का, समीचीन करना परिहार।
सम्यक् ज्ञान के द्वारा होता, जग में जीवों का उपकार।।
ज्ञान को सम्यक् करने वाला, होता है सम्यक् श्रद्धान्।
पुद्गल अर्ध परावर्तन में, जीव करे निश्चय कल्याण।।
भेद ज्ञान को पाने वाला, करता हूँ निजगुण में वास।
वस्तु तत्त्व का निर्णय करने, से हो मोह तिमिर का ह्रास।।
निरतिचार व्रत के पालन से, हो जाता है स्थिर ध्यान।
चिदानन्द को पाने वाले, करते निजानन्द रसपान।।
कर्मों का संवर हो जिससे, आश्रव का हो पूर्ण विनाश।
गुण श्रेणी हो कर्म निर्जरा, होवे केवलज्ञान प्रकाश।।
रत्नत्रय का फल यह अनुपम, अनन्त चतुष्टय होवे प्राप्त।
अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध सनातन बनते आप्त।।
अन्तर्मन की यही भावना, रत्नत्रय का होय विकास।
कर्म निर्जरा करें विशद हम, पाएँ सिद्ध शिला पर वास।।

दोहा– तीनों लोकों में कहा, रत्नत्रय अनमोल।
रत्नत्रय शुभ धर्म की, बोल सके जय बोल।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जिसने भी इस लोक में, पाया यह उपहार।
अनुक्रम से उनको मिला, विशद मोक्ष का द्वार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

चतुर्थ वलयः

दोहा– चौंसठ ऋद्धिधर मुनि, अवधि ज्ञान के ईश।
देवों द्वारा पूज्य हैं, तिन्हें झुकाते शीश।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

चतुर्णिकाय देव पूजन

स्थापना

चउ निकाय के देव लोक में, रहते हैं अपने स्थान।
उनके इन्द्र चरण में आकर, करते सब प्रभु का गुणगान।।
रक्षक देव प्रभु के पद में, रक्षा हेतु सभी प्रधान।
भक्ति में तत्पर रहते हैं, अतः प्राप्त करते सम्मान।।

दोहा– जिन धर्मी जो इन्द्र हैं, अनुपम शक्तिवान।
उनका यज्ञ विधान में, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द–भुजंगप्रयात)

भरी जल की झारी, हम प्रासुक कराई।
विशद भेंट देने को, ये हमने मँगाई।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं समर्पयामीति स्वाहा।

यहाँ श्रेष्ठ चन्दन, घिसाकर के लाए।
विशद श्रेष्ठ शीतलता, पाने हम आए।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

धवल श्रेष्ठ अक्षत ये, हमने धुवाए।
विशद भेंट देने को, हम आज आए।।

यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् समर्पयामीति स्वाहा।

विशद पुष्प उपवन के, चुनकर के लाए।
यहाँ भेंट देकर के, हम हर्ष पाए।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं समर्पयामीति स्वाहा।

मधुर मोदकादि ये, ताजे बनाए।
विशद भेंट देकर, खुशी आज पाए।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

यहाँ रत्नमय दीप, घी के जलाए।
विशद मोहतम को, घटाने हम आए।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

जला धूप कर्मों, की सेना भगाए।
विशद भेंट पाने, सभी देव आए।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

सरस मिष्ठ ताजे, ये फल भी मंगाए।
सभी भेंट पाएँ, यहाँ जो भी आए।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं समर्पयामीति स्वाहा।

सभी द्रव्य का अर्घ्य, हमने बनाया।
उन्हें भी बुलाते, कभी जो न आया।।
यहाँ ऋषि मण्डल की, पूजा में आओ।
सभी देव आकर के, सम्मान पाओ।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

अर्घ्य (शम्भू छंद)

अधोलोक में भवन बने जो, उनमें रहते इन्द्र महान।
बनें सहाई यहाँ यज्ञ में, यज्ञ भाग पावें सम्मान।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोकवासी देवेभ्यो अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

ऊर्ध्वलोक या मध्यलोक में, व्यंतर वासी देव प्रधान।
बनें सहाई यहाँ यज्ञ में, यज्ञ भाग पावें सम्मान।।2।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोकवासी देवेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्यलोक उद्योतित करते, ज्योतिषवासी देव विमान।
बनें सहाई यहाँ यज्ञ में, यज्ञ भाग पावें सम्मान।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकवासी देवेभ्यो अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

ऊर्ध्वलोक में रहने वाले, वैमानिक के इन्द्र महान।
बनें सहाई यहाँ यज्ञ में, यज्ञ भाग पावें सम्मान।।4।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोकवासी देवेभ्यो अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

तीन लोक में रहने वाले, चतुर्निकाय के देव महान।
बनें सहाई यहाँ यज्ञ में, यज्ञ भाग पावें सम्मान।।5।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वअधो मध्यलोक स्थित सर्व देवेभ्यो अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जिन अर्चा कर लो यहाँ, सम्यक् दृष्टि देव।
गायेंगे जयमाल हम, नित प्रति यहाँ सदैव।।

(चौपाई छन्द)

भवन वासी भवनों में रहते, उन्हें भवन वासी हम कहते।
असुरादि दश भेद बताए, सबके दो–दो इन्द्र गिनाए।।

हैं प्रतीन्द्र दो–दो ही भाई, जिनकी है जग में प्रभुताई।
इस प्रकार चालिस यह जानो, जिनवर के सेवक पहिचानो।।
अधोलोक खर भाग में जानो, पंक भाग में भी पहिचानो।
इनके भवन बने जो भाई, उनकी महिमा कही न जाई।।
उनमें चैत्यालय शुभ गाए, जिनबिम्बों से सहित बताए।
उनको यह सब पूजें भाई, पूजा कर पावें प्रभुताई।।
मध्य अधो द्वय लोक में जानो, व्यंतर देवों को पहिचानो।
आठ भेद इनके भी गाये, दो–दो इन्द्र ग्रन्थ में गाए।।
हैं प्रतीन्द्र दो–दो भी भाई, छत्तिस इन्द्र की संख्या गाई।
पञ्च भेद ज्योतिष के जानो, इन्द्र प्रतीन्द्र चन्द्र रवि मानो।।
सोलह कल्प स्वर्ग में गाए, उनमें बारह इन्द्र बताए।
हैं प्रतीन्द्र बारह भी भाई, बत्तिस इन्द्र की संख्या गाई।।
जिनपूजा को यह सब आवें, श्रद्धा जैन धर्म में पावें।
धर्मध्यान पूजा से होवे, सारा मन का कालुष खोवें।।
व्रत धारण जो न कर पावें, त्याग भाव न मन में आवें।
धर्मी से वात्सल्य जगावें, सम्यक् दृष्टि यह गुण पावें।।
जैन चार गति में जो गाये, जिनवर के वह भक्त कहाए।
आपस में सहधर्मी जानो, वह सम्मान योग्य पहिचानो।।
जो जिसके भी योग्य बताए, वह विघ्नों को दूर हटाए।
जिन में सद् श्रद्धान जगाए, शिवपुर का राही कहलाए।।

दोहा– जिन भक्तों का जैन तुम, करो योग्य सम्मान।
सम्यक् दृष्टि के लिए, हैं कर्त्तव्य प्रधान।।

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देवेभ्यो जयमाला अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सोरठा– चतुर्गति के जैन का, यही रहा कर्त्तव्य।
जिन भक्ति सम्मान भी, करो जैन का भव्य।।

इत्याशीर्वादः

चौंसठ ऋद्धि पूजा

स्थापना

तीर्थंकर चौबीस लोक में, मंगलमय मंगलकारी।
गणधर ऋद्धिधारी गुरुवर, होते हैं कल्मष हारी।।
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ चौंसठ अनुपम, जिनकी महिमा रही महान।
तीर्थंकर गणधर का करते, श्रेष्ठ ऋद्धियों का आह्वान।।
यही भावना रही हमारी, होवे इस जग का कल्याण।
विशद भाव से करते हैं हम, उनका सब अतिशय गुणगान।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल भर, हम पूजन को लाए हैं।
जन्म जरादि रोग नशाकर, शिव पद पाने आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केसर आदि सुगन्धित, हमने यहाँ घिसाए हैं।
भव संताप नशाने को हम, आज यहाँ पर लाए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम अक्षय अक्षत हम, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
अक्षय पद पाने को अनुपम, भाव बनाकर आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प मनोहर सुन्दर, थाली में भर लाए हैं।
कामबाण की बाधा अपनी, हम हरने को आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ताजे नैवेद्य बनाकर, अर्चा करने आए हैं।
क्षुधा रोग है काल अनादि, उसे नशाने आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीप जला करके हम, आरति करने आए हैं।
मोह तिमिर भारी छाया वह, मोह नशाने आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन आदि शुभ द्रव्यों से, धूप बनाकर लाए हैं।
वसु कर्मों ने हमें सताया, छुटकारा पाने आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला केला श्रीफल आदि, यहाँ चढ़ाने आए हैं।
मोक्ष महाफल पाने को हम, भाव बनाकर आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादि अष्ट द्रव्य का, अनुपम अर्घ्य बनाए हैं।
पद अनर्घ पाने हेतु यह, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।
बुद्धि आदि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, जैन मुनीश्वर पाते हैं।
ऋद्धिधारी जिन संतों के, पद हम शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– धारा देते आज, शांति पाने के लिए।
पाने शिव का राज, पूजा करते भाव से।।

(शांतये शान्तिधारा)

सोरठा– भाव भक्ति के साथ, पुष्पाञ्जलि करते यहाँ।
हे त्रिभुवन के नाथ, ऋद्धी सिद्धी दो मुझे।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ऋद्धियों के आठ अर्घ्य

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, अवधि मनःपर्यय केवल।
बीज कोष्ठ पदानुसारिणी, प्रज्ञाश्रमण ऋद्धि मंगल।।
प्रत्येक बुद्धि वादित्व पूर्व दश, अरु चौदह पूरब में चित्त।
दूर गंध स्पर्श श्रवण रस, संभिन्न श्रोतृ अष्टांग निमित्त।।
सर्व ऋद्धियों से मुनिवर की, प्रखर बुद्धि हो सम्यक्ज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम उनका गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टादश भेदयुत बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ हैं भेद ऋद्धि चारण के, अग्नि जल वायु आकाश।
पुष्प मेघ जल ज्योतिष जंघा, चारण भेद कहे यह खास।।
गमन करें ऋद्धिधारी मुनि, जीव नहीं तब पावें कष्ट।
आत्मध्यान तप के द्वारा मुनि, अष्ट कर्म कर देते नष्ट।।2।।

ॐ ह्रीं नव भेदयुतचारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ विक्रिया ऋद्धि के शुभ, एकादश हैं भेद प्रधान।
अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, प्राप्ति अरु प्राकाम्य महान्।।
हैं ईशत्व वशित्व भेद यह, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघात ऋद्धि को पाने, करूँ मुनीश्वर का गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं एकादश भेदयुत विक्रिया ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैनागम में तप ऋद्धि के, भाई भेद बताए सात।
उग्र तप्त अरु घोर महातप, उग्र तपोतप हैं विख्यात।।
घोर पराक्रम अघोर ब्रह्मचर्य, तप के अतिशय रहे महान्।
तपधारी मुनिवर की पूजा, करके करते हैं गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं सप्तभेदयुत तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल ऋद्धि के तीन भेद शुभ, आगम में बतलाते हैं।
मन बल वचन काय बल ऋद्धि, जैन मुनीश्वर पाते हैं।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, पावन ऋद्धी पाने को।
कर्म नाशकर अपने सारे, शिवपुर नगरी जाने को।।5।।

ॐ ह्रीं त्रयभेदयुत बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट भेद औषधि ऋद्धि के, आमर्षौषधि रहा प्रधान।
खेल्लौषधि अरु जल्ल मल्ल शुभ, विडौषधि सर्वौषधि वान।।
मुख निर्विष दृष्टि निर्विष यह, औषधि ऋद्धि अष्ट प्रकार।
ऋद्धिधारी मुनिवर को हम, करते वंदन बारंबार।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टभेदयुत औषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद कहे छह रस ऋद्धी के, जैनागम में श्री जिनेश।
आशीर्विष दृष्टि विष ऋद्धी, पाते हैं जिन मुनि विशेष।।
क्षीर मधु अमृतस्रावि घृत, स्रावि रस ऋद्धि को धार।
मुनिवर रस ऋद्धि को पाते, तप के द्वारा विविध प्रकार।।7।।

ॐ ह्रीं षड्भेदयुत रस ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अक्षीण महानस ऋद्धि, के दो भेद कहे तीर्थेश।
प्रथम कहा अक्षीण महानस, और महालय कहा विशेष।।
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी मुनिवर, जग में होते अपरंपार।
उनके चरणों वंदन करते, भाव सहित हम बारंबार।।8।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस एवं अक्षीण महालय ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि आदि अष्ट ऋद्धियों के, चौंसठ बतलाए प्रभेद।
भाव सहित हम पूजा करते, हरो मुनीश्वर मेरा खेद।।
ऋद्धि सिद्धियों को तजकर मम्, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।
सर्व ऋद्धि धारी मुनियों के, श्री चरणों में विशद प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं ऋद्धिधारक अतीत अनागत वर्तमानकाल सम्बन्धी सर्व ऋषीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जिन मुद्रा धारी मुनि, पावें ऋद्धि त्रिकाल।
उनकी हम गाते यहाँ, भाव सहित जयमाल।।

(शम्भू छंद)

जय-जय तीर्थंकर क्षेमंकर, जय गणधर ऋद्धि के धारी।
जय मोक्ष मार्ग के अभिनेता, जय परम दिगम्बर अविकारी।।
जो सकल व्रतों के धारी हैं, शुभ सम्यक् तप लवलीन रहे।
वह श्रेष्ठ ऋद्धियों के धारी, इस धरती पर जिन संत कहे।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, अतिशय कारी श्रेष्ठ रहे।
और विक्रिया ऋद्धि के सब, भेद एकादश प्रभु कहे।।
भेद विक्रिया ऋद्धि के शुभ, नव जानो अतिशयकारी।
तप ऋद्धि के सात भेद शुभ, कहे गये मंगलकारी।।
बल ऋद्धि के तीन भेद शुभ, जैनगाम में कहे महान।
आठ भेद औषध ऋद्धि के, बतलाए हैं जिन भगवान।।

रस ऋद्धि के भेद कहे छह, जिनका कौन करे गुणगान।
अक्षीण ऋद्धि के भेद कहे दो, क्षीण न हो भोजन स्थान।।
चौंसठ भेद कहे यह भाई, आठों ऋद्धि के सुखकार।
संख्यातीत भेद इनके ही, हो जाते हैं मंगलकार।।
बुद्धि ऋद्धि के द्वारा मुनिवर, बुद्धि पाते अतिशयकार।
और विक्रिया ऋद्धि द्वारा, रूप बनाते विविध प्रकार।।
चारण ऋद्धि पाकर ऋषिवर, करते हैं आकाश गमन।
चलें पुष्प के ऊपर मुनिवर, फिर भी न हो जीव मरण।।
दीप्त सुतप आदि ऋद्धि धर, तप करते हैं विस्मयकार।
फिर भी कांतिमान तन पाते, मुनिवर करते न आहार।।
तप्त सुतप ऋद्धि धारी मुनि, के न होता है नीहार।
जगत विजय की शक्ति पाते, मुनिवर अतिशय ऋद्धिधार।।
रूखा भोजन भी हो जाता, मुनि के कर में मंगलकार।
क्षीर मधु अमृत स्रावी रस, मुनि के कर में मंगलकार।।
औषधि ऋद्धिधर मुनि तन से, स्पर्शित वायु के रोग।
तन का मल छू जाने से भी, हो जाते हैं जीव निरोग।।
जिन्हें प्राप्त अक्षीण ऋद्धियाँ, ऐसे श्रेष्ठ मुनि के पास।
अन्न क्षीण न होय कभी भी, अक्षय होता क्षेत्र निवास।।

(छन्द : घत्तानंद)

जय-जय अविकारी, ऋद्धिधारी, और ऋद्धियाँ सर्व प्रकार।
हम पूजें ध्यावें, शीश झुकावें, ऋषि चरणों में बारम्बार।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धि धारक सर्व ऋषिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- ऋद्धि सिद्धि से विशद, पाकर शक्ति अपार।
रत्नत्रय निधि प्राप्तकर, पाएँ मोक्ष का द्वार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनि पूजा

स्थापना

श्रेष्ठ साधना तप करके मुनि, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश।
अवधि ज्ञान देशावधि परमा, सर्वावधि प्रगटाते खास।।
मुनि नाथ जग के हितकारी, करते हैं सबका कल्याण।
हृदय कमल में यहाँ आपका, करते हैं हम भी आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पद्धडि छंद)

जल प्रासुक करके यहाँ आन, यह चढ़ा रहे आके महान।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन में है अनुपम सुवास, हम चढ़ा रहे हैं यहाँ खास।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत की अलग शान, हम चढ़ा रहे अतिशय महान।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम सुमन यहाँ लाए विशेष, अब काम नशे मेरा अशेष।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बनाए शुद्ध आज, कर क्षुधा नाश पाएँ स्वराज।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।5।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह दीप जलाए हैं महान, हो मोह तिमिर की पूर्ण हान।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चढ़ा रहे यह श्रेष्ठ धूप, हम पद पाएँ अतिशय अनूप।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम श्रेष्ठ सुफल लाए प्रसिद्ध, पाके मुक्ति पद बनें सिद्ध।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चढ़ा रहे यह श्रेष्ठ अर्घ्य, पद पाएँ शुभ अतिशय अनर्घ्य।
अब श्रुतावधि पाने सुज्ञान, हम करते हैं अर्चा प्रधान।।9।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनि के अर्घ्य

ज्ञान श्रुतावधि के द्वारा शुभ, जीव जानते श्रुत का मर्म।
सम्यक् रत्नत्रय के धारी, संत नशाते अपने कर्म।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
वीतराग निर्ग्रन्थ मुनि के, चरणों शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यंतर तप के द्वारा, देशावधि पाते सद्ज्ञान।
सम्यक् रत्नत्रय के धारी, संतों का करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
वीतराग निर्ग्रन्थ मुनि के, चरणों शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देशावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमावधि ज्ञानधारी मुनि, पाकर सम्यक्ज्ञान महान।
सम्यक् ज्ञान से पुद्गल द्रव्य, का मुनिवर करते हैं व्याख्यान।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
वीतराग निर्ग्रन्थ मुनि के, चरणों शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री परमावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वावधि ज्ञानधारी मुनि, द्रव्य जानते अणु समान।
मुक्ति में कारण जो बनता, जैन मुनि का सम्यक् ज्ञान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
वीतराग निर्ग्रन्थ मुनि के, चरणों शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव से, श्रुतावधि के ज्ञाता हैं।
मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, भवि जीवों के त्राता हैं।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
वीतराग निर्ग्रन्थ मुनि के, चरणों शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– विशद ज्ञान से लोक में, कटे कर्म का जाल।
श्रुतावधि सद्ज्ञान की, गाते अब जयमाल।।

(विष्णुपद छन्द)

हैं संसार असार भोग सब, मन में यह धारा।
छोड़ दिया घर बार परिग्रह, छोड़ा परिवारा।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण को, गुरु पद में पाया।
सम्यक् तप अपने जीवन में, जिनने अपनाया।।
पञ्च महाव्रत समिति धारते, मुनिवर अनगारी।
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं वह, शुभ मंगलकारी।।
देशावधि पाते हैं जिनवर, ऋद्धि के द्वारा।
परमावधि शुभ जिन मुनियों ने,जीवन में धारा।।

सर्वावधि ज्ञान के धारी, होते शुभकारी।
पुद्गल द्रव्य जानने वाले, होते शिवकारी।।
निज आतम को ध्याने वाले, मुनि होते भाई।
फैल रही है जिन मुनियों की, जग में प्रभुताई।।
शांत स्वरूप धारने वाले, होते शुभकारी।
क्रूर पशु भी तजें क्रूरता, भव–भव की सारी।।
ध्यान करें एकाग्रचित्त हो, मुनि शिवपथ गामी।
कर्म निर्जरा करते अनुपम, मुक्ति के स्वामी।।
श्रुतावधि के द्वारा मुनिवर, शास्त्र प्रसार करें।
मूर्त पदार्थ सर्वावधि द्वारा, ज्ञान से आप वरें।।
परमावधि ज्ञान के द्वारा, अणु को भी जानें।
शाश्वत सुख प्रगटाने वाले, निज को पहिचानें।।
पूजा करके योगिराज की, सौख्य अपार बढ़े।
मोक्षाभिलाषी भवि जीवों पर, तप का रंग चढ़े।।

दोहा– पूजा करते हम यहाँ, भक्ति भाव के साथ।
श्रुतावधि ऋषिराज पद, झुका रहे हम माथ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतावधि ज्ञानधारक मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– पुण्य फले अभिराम, ऋषिवर की पूजा किए।
होवे जग में नाम, भक्त जनों के बीच में।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्

पञ्चम वलयः

दोहा– आदि देवता देवियाँ, पूजा करें त्रिकाल।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, गाते हैं जयमाल।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

आदि देवता (देवियाँ) पूजन

स्थापना

श्री ह्री आदि देवियाँ, भक्ति हेतु प्रधान।
जिन पूजानुष्ठान में, तिष्ठें निज स्थान।।
आके भक्ति भाव से, पूर्ण करो शुभ काज।
होवे धर्म प्रभावना, आओ सकल समाज।।
जिनवर का करते विशद, आज यहाँ गुणगान।
आ तिष्ठो मेरे निकट, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री ह्री आदि चतुर्विंशति देवता (देवि) ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(तर्ज – तुमसे लागी लगन.....)

भक्त आये यहाँ, पूजा करने महा, इन्द्र आये।
प्रभु चरणों में मस्तक झुकाए।।
नीर हमने ये प्रासुक कराया, नाथ ! चरणों में तुमरे चढ़ाया।
जन्म का नाश हो, मोक्ष में वास हो, नीर लाए, ... प्रभु।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ह्री आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं समर्पयामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ चंदन घिसाकर के लाए, साथ केसर भी उसमें मिलाए।
कर्म संहार हो, नाश संसार हो, जो बढ़ाए ... प्रभु।।2।।

ॐ ह्रीं श्री ह्री आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ अक्षत धुवाकर ये लाए, नाथ चरणों में शुभ ये चढ़ाए।
कर्म का ह्रास हो, मुक्ति पद वास हो, जिन हमारे ... प्रभु।।3।।

ॐ ह्रीं श्री ह्री आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् समर्पयामीति स्वाहा।

पुष्प तन्दुल के हमने बनाए, केसरादि से वह शुभ रंगाए।
काम का नाश हो, हृदय विश्वास हो, सौख्य पाएँ ... प्रभु।।4।।

ॐ ह्रीं श्री ह्री आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं समर्पयामीति स्वाहा।

शुद्ध नैवेद्य ताजे बनाए, थाल हम यह चढ़ाने को लाए।
क्षुधा का नाश हो, भव से अवकाश हो, मोक्ष पाएँ ... प्रभु।।5।।

ॐ ह्रीं श्री ह्री आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दीप घृत के ये हमने जलाए, आरती करने प्रभु की हम आए।
मोह का नाश हो, पूर्ण मम आस हो, हर्ष छाए ... प्रभु।।6।।

ॐ ह्रीं श्री ह्री आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में आके जलाएँ, आठों कर्मों को अपने नशाएँ।
नाश मम राग हो, मोह का त्याग हो, मोक्ष पाएँ ... प्रभु।।7।।

ॐ ह्रीं श्री ह्री आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

लौंग बादाम श्रीफल मँगाए, फल चढ़ाने को हम आज आए।
जीव यह आप्त हो, मोक्षफल प्राप्त हो, मुक्ति पाएँ ... प्रभु।।8।।

ॐ ह्रीं श्री ह्री आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं समर्पयामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों को हमने मिलाया, अर्घ्य अनुपम ये सुन्दर बनाया।
प्राप्त सद्ज्ञान हो, मेरा कल्याण हो, मोक्ष पाएँ ... प्रभु।।9।।

ॐ ह्रीं श्री ह्री आदि चतुर्विंशति देवीभ्यो अनर्घपदप्राप्तेय अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ देवि द्वारा अर्चा *(शम्भू छंद)*

श्री समृद्धि लेकर आओ, श्री देवि तुम यहाँ अपार।
जिन भक्ति पूजा अर्चा कर, शान्ति पाएँ अपरम्पार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

ह्री देवि उत्साह सहित तुम, आओ श्री जिन के आधार।
जिन भक्ति पूजा अर्चा कर, शान्ति पाएँ अपरम्पार।।2।।

ॐ ह्रीं ह्री देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

धृति देवि तुम करो वन्दना, श्री जिन चरणों बारम्बार।
जिन भक्ति पूजा अर्चा कर, शान्ति पाएँ अपरम्पार।।3।।

ॐ ह्रीं धृति देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

लक्ष्मी देवि सद्भक्तों को, लक्ष्मी देना यहाँ अपार।
जिन भक्ति पूजा अर्चा कर, शान्ति पाएँ अपरम्पार।।4।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मी देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

गौरी देवि अरिहन्तों की, महिमा का तुम करो प्रसार।
जिन भक्ति पूजा अर्चा कर, शान्ति पाएँ अपरम्पार।।5।।

ॐ ह्रीं गौरी देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

आओ देवि यहाँ चण्डिका, जैन धर्म का करो प्रचार।
जिन भक्ति पूजा अर्चा कर, शान्ति पाएँ अपरम्पार।।6।।

ॐ ह्रीं चण्डी देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

देवि सरस्वती तुम आके, जिनवाणी का दो वरदान।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं सरस्वती देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

जया देवि तुम जयकारों से, आन गुँजाओं यह स्थान।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं जया देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

देवि अम्बिका अर्हन्तों की, महिमा का तुम करो बखान।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं अम्बिका देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

विजया देवि विजय दिलाओ, सद्भक्तों को यहाँ प्रधान।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान।।10।।

ॐ ह्रीं विजया देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

किलन्ना देवि करो अर्चना, जिनने पाया केवल ज्ञान।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान।।11।।

ॐ ह्रीं किलन्ना देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा केवल ज्ञानी, तीन लोक में रहे महान्।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान।।12।।

ॐ ह्रीं अजिता देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

नित्या देवि नित्य प्रति तुम, करो प्रभु का सम्यक् ध्यान।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान।।13।।

ॐ ह्रीं नित्या देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

श्री जिनवर के चरण शरण, मदद्रवा पाओ स्थान।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति अर्चना, करो भाव से तुम गुणगान।।14।।

ॐ ह्रीं मदद्रवा देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

(दोहा)

देवी कामांगा सभी, करती विघ्न विनाश।
जिन अर्चा करती विशद, करके धर्म प्रकाश।।15।।

ॐ ह्रीं कामांगा देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म को नाश कर, हुए श्री के नाथ।
कामबाणा अर्चा करें, चरण झुकाकर माथ।।16।।

ॐ ह्रीं कामबाणा देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

सानन्दा आनन्द से, भक्ति करे त्रिकाल।
श्री जिनेन्द्र के चरण में, सदा झुका कर भाल।।17।।

ॐ ह्रीं सानन्दा देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

नन्द मालिनी भाव से, करे प्रभु गुणगान।
दिव्य अर्घ्य अर्पित करे, चरण शरण में आन।।18।।

ॐ ह्रीं नन्दमालिनी देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

माया देवि का यहाँ, करे कौन गुणगान।
पूजा भक्ति में सदा, पाती जो स्थान।।19।।

ॐ ह्रीं माया देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

देवि मायाविनी है विशद, श्री जिनेन्द्र की भक्त।
जिन अर्चा में जो रहे, सदा सदा आसक्त।।20।।

ॐ ह्रीं मायाविनी देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

रौद्री रौद्र स्वरूप तज, पूजा करे विधान।
जिन अर्चा में जो सदा, पावे निज स्थान।।21।।

ॐ ह्रीं रौद्री देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

कला कलाएँ कर सदा, करे प्रभु गुणगान।
जिन अर्चा करके स्वयं, पाती है सम्मान।।22।।

ॐ ह्रीं कला देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

काली देवि आनकर, करे श्रेष्ठ सहयोग।
सद् भक्तों के साथ में, धारे पूजा योग।।23।।

ॐ ह्रीं काली देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

कलिप्रिया सद् भक्त का, रखती पूरा ध्यान।
सारे विघ्न निवारती, जिन पूजा में आन।।24।।

ॐ ह्रीं कलिप्रिया देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरु बलिं स्वास्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावाभिवेदितान् यजामहे प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा।

श्री ह्री आदि देवियाँ, पाके निज स्थान।
ऋषि मण्डल की रक्षिका, बनकर रहें महान।।25।।

ॐ ह्रीं श्री, ह्री, धृति, लक्ष्मी, गौरी, चण्डी, सरस्वती, जया, अम्बिका, विजया, क्लिन्ना, अजिता, नित्या, मदद्रवा, कामांगा, कामबाणा, सानंदा, नंदमालिनी, माया, मायाविनी, रौद्री, कला, काली, कलिप्रिया इति चतुर्विंशति जिनेन्द्र भक्त देवीभ्यो यज्ञांशं ददामि सर्वा एव प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

जयमाला

दोहा- पूजा करने देवियाँ, लाए द्रव्य के थाल।
भक्ति से जिनदेव की, गाती हैं जयमाल।।

(चाल छन्द)

श्री आदि देवियाँ आवें, मन में अति हर्ष बढ़ावें।
जिनवर के जो गुण गावें, मन में अति मोद मनावें।।
जिन पूजा में जो आवें, सम्मान श्रेष्ठ वह पावें।
मिथ्यावादी जो होवें, सम्यक्त्व क्रिया वह खोवें।।
कई बाधाएँ वह डालें, श्री आदि आन सम्हालें।
भक्तों पर संकट आवें, बाधाएँ दूर भगावें।।
वात्सल्य भाव प्रगटावें, सब सहयोगी बन जावें।
भक्ति में साथ निभावें, सम्यक्त्व जीव जो पावें।।
श्री आदि देवियाँ जानो, इन गुण से संयुत मानो।
साधर्मी धर्म करावें, सहयोगी साथ बुलावें।।
शुभ क्रिया धर्म की जानो, न धर्मी बिन हो मानो।
करते आह्वानन प्राणी, है जिन वृत्ति कल्याणी।।
सत्कार प्रतिष्ठा भाई, निस्वार्थ करें सुखदायी।
सज्जन के गुण यह गाए, वात्सल्य रूप बतलाए।।
शक्ति से भक्ति कीजे, सम्मान सभी को दीजे।
जल फल आदि शुभ लावें, नैवेद्य श्रेष्ठ बनवावें।।

दोहा- पूजा करने देवियाँ, जिन भक्तों के साथ।
विघ्न दूर करके विशद, चरण झुकाए माथ।।

ॐ ह्रीं श्री ह्री चतुर्विंशति देवीभ्यो जिन पूजा भागं ददामि प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

दोहा- भक्ति करने के लिए, आते यहाँ प्रधान।
अर्चा करते भाव से, विशद करें गुणगान।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रां ह्रिं ह्रुं ह्रूँ ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यक्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– चौबिस जिन युत ह्रीं शुभ, शब्द ब्रह्म जग सिद्ध।
रत्नत्रय परमेष्ठी वसु, ऋद्धि जगत प्रसिद्ध।।
श्रुतावधि धारक मुनि, जग में पूज्य त्रिकाल।
देव देवियाँ भी यहाँ, गावें शुभ जयमाल।।

(शम्भू छंद)

मंत्र प्रधान ऋषि मण्डल शुभ, जग में महिमावान कहा।
नायक ह्रीं विशद जिसका है, चौबिस जिन युत श्रेष्ठ अहा।।
शब्द ब्रह्म हैं सिद्ध लोक में, अ आ आदि स्वर व्यञ्जन।
ध्यान किए हरते हैं सारा, जीवों का जो कर्माञ्जन।।
बीजाक्षर ह भा रादि वसु, का जिसमें रहता परिवार।
परमेष्ठी पाँचों गुण संयुत, जहाँ शोभते मंगलकार।।
रत्नत्रय की बहे त्रिवेणी, जिसमें करना अवगाहन।
सर्व ऋषीश्वर शोभित होते, ऋद्धि युक्त परम पावन।।
श्रुत केवली श्रुत के धारी, चार अवधि धारी मुनिनाथ।
गुण कीर्तन जिनका करते सब, भक्त चरण में जोड़े हाथ।।
चउ निकाय के देव यहाँ पर, भक्ति करते सह परिवार।
पूजा अर्चा करें वन्दना, भाव सहित जो मंगलकार।।
श्री आदि जो कहीं देवियाँ, उनका कौन करें गुणगान।
जिनवर की सेवा में तत्पर, रहती हैं जो महति महान।।
रक्षक नगर को घेरे रहते, देव देवियाँ उसी प्रकार।
देव–शास्त्र–गुरु की रक्षा में, तत्पर रहते सह परिवार।।
अन्तिम वलय में सर्व देवियों, का भाई जानो स्थान।
प्रिय बन्धु सम उनका करना, आप यहाँ पर भी सम्मान।।
सुख सौभाग्य प्रदायक अनुपम, ऋषि मण्डल यह रहा महान।
रोग–शोक दारिद्र मिटाने, वाला जग में रहा प्रधान।।
भाव सहित जपने वाला नर, हो जाता है श्री का नाथ।
स्वजन और परिजन बन्धु सब, शत्रु भी देते हैं साथ।।
कर्म निर्जरा करे स्वयं ही, हो जावे शिव पद का ईश।
अक्षय सुख को पाने वाला, बनता जगतिपति जगदीश।।

दोहा– श्री ऋषि मण्डल रहा, जग में श्रेष्ठ महान्।
विघ्न हरण मंगल करन, पावन परम विधान।।

ॐ ह्रीं ऋषि मण्डलान्तर्गत सर्व अर्हंसिद्ध ऋषि मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं देव देवीभ्यो यज्ञ भागं च ददामि स्वाहा।

दोहा– यंत्र ऋषि मण्डल 'विशद', जग में रहा प्रसिद्ध।
उसकी अर्चा से स्वयं, कार्य होय सब सिद्ध।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

ऋषि मण्डल आरती

(तर्ज – हो बाबा हम सब उतारें तेरी आरती...)

यंत्र ऋषि मण्डल की करते, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर घृत के लाए, आज यहाँ शुभकार।।
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती....
गोलाकार के मध्य विराजे, ह्रींकार मनहार।
चौबीस तीर्थंकर से शोभित, होता अपरम्पार।।
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती....
ऋषि मण्डल स्तोत्र जाप से, मन वांछित फल पाए।
शाकिन डाकिन भूत–प्रेत की, बाधा नहीं सताए।।
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती....
रोग–शोक सर्पादि का विष, क्षण में होय विनाश।
निर्धन मन वांछित धन पावें, होवे पूरी आस।।
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती....
पुत्र हीन सुत पावें वांछित, ग्रह का मिटे क्लेश।
खोये स्वजन वस्तु को पायें, शान्ति पायें विशेष।।
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती....
हर्षित मन से करें आरति, पावे पुण्य अशेष।
अनुक्रम से मुक्ति पद पावें, जावे स्वयं स्वदेश।।
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती....
'विशद' भावना भाते हैं हम, होवें कर्म विनाश।
यह संसार असार छोड़कर, पाएँ शिवपुर वास।।
हो भाई हम सब उतारें मंगल आरती....

प्रशस्ति

भरत क्षेत्र के मध्य है, भारत देश महान।
मध्य प्रदेश का देश में, रहा अलग स्थान।।
जिला छतरपुर में रहा, कुपी लघु सा ग्राम।
लाल भरोसे सेठ का, रहा श्रेष्ठ शुभ नाम।।
उनके अन्तिम पुत्र थे, नाम था नाथूराम।
जिला छतरपुर में गये, वहाँ बनाया धाम।।1।।
जिनके द्वितीय पुत्र थे, जिनका नाम रमेश।
दीक्षा ले जिनने धरा, श्रेष्ठ दिगम्बर भेष।।
विमल सिन्धु गुरुवर हुए, इस जग में विख्यात।
विराग सिन्धु जग में हुए, जैन धर्म में ख्यात।।2।।
दीक्षा गुरु कहलाए वह, किया बड़ा उपकार।
भरत सिन्धु जी ने दिया, जिनको पद आचार्य।।
काव्य कला है श्रेष्ठ शुभ, विशद सिन्धु की खास।
लेखन चिंतन मनन में, जो रखते विश्वास।।3।।
हरियाणा के जिला शुभ, रेवाड़ी में आन।
ऋषि मण्डल का पूर्ण यह, कीन्हा विशद विधान।।
पच्चीस सौ सैंतीस शुभ, रहा वीर निर्वाण।
श्रावण कृष्णा चौथ दिन, मंगलवार महान।।4।।
जिनने अपनी कलम से, लिखे हैं कई विधान।
सारे भारत देश में, होता है गुणगान।।
काव्य कथा नाटक तथा, लिखते हैं कई लेख।
शास्त्र और पत्रिकाओं में, जिनका है उल्लेख।।5।।
विद्याभूषण सूरि मुनि, गुण नन्दि महाराज।
वन्दन जिनके चरण में, करती सकल समाज।।
श्री ऋषि मण्डल शुभम्, जिनने लिखा विधान।
संस्कृत में रचना किए, मुनिवर श्रेष्ठ महान।।6।।
हिन्दी में अनुवाद कर, जिसका किया बखान।
ऐसी अनुपम कृति से, करो सभी गुणगान।।
लघु धी से जो भी लिखा, मानो उसे प्रमाण।
पूजा अर्चा कर 'विशद', पाओ पद निर्वाण।।7।।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर